

Handwritten signature

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल मु.उ.पु. 24 पृष्ठ
कार्यालयीन उपयोग के लिए निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील

हायर सेकण्ड्री परीक्षा



विषय कोड

परीक्षा का विषय हिन्दी

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12-03-2008

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्र. 321108

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर कोड सेट (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः करें

कोड सेट U-2001 8

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में 2 अंकों में 2
ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्षा क्रमांक 1 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

परीक्षा का क्रमांक K 2286860
परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अधोनी अंकों में)
9 3 2 1 9 6 5 3
दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

B
S
E
M
P
हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) *[Signature]*
नाम R. S. पद Asst. Insp.
पता/संस्था H. S. School
परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।
हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका सप्ता स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कि पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक स...

हस्ताक्षर (परीक्षक)

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक

दिनांक

दिनांक

[Signature]
9440010

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

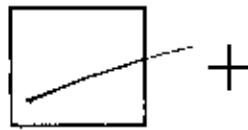
परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



योग पूर्व पृष्ठ



5



प्रश्न → 1

उ० →

(i) मीराबाई कृष्ण भक्ति शाखा की कवयित्री हैं।

(ii) गणेश जी को सबसे पहले पूजा जाता है।

(iii) कबीरदास को हृष्यहीन कवि कहा जाता है।

(iv) बलदास श्रीकृष्ण को चिदा-चिदाकर परीक्षण करते हैं।

(v) मूरदास वात्सल्य के कुशल चिह्न हैं।

B
S
E
M
P

प्रश्न → 2

उ० →

(i) अमरांका में भय में।

(ii) बसन्ती और बद्ध को।

(iii) विजयौर से।

(iv) रेडीमैड अद्यक्ष।

(v) बचपन के अनुभव।



प्रश्न → 3

उ० →

- (i) सत्य । ✓
 (ii) सत्य । ✓
 (iii) असत्य । ✓
 (iv) असत्य । ✓
 (v) सत्य । ✓

B
S
E
M
P

4

उ० →

- (i) कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है — ~~केशवदास~~
 (ii) हमें अनिश्चित या असम्य
बताने वाले — ~~पश्चिमी देश~~
 (iii) 'बढ़ सिपाही' कविता के
रचयिता हैं। — ~~विष्णु कान्त शास्त्री~~
 (iv) झुकाने की सामर्थ्य है। — ~~वीर~~
 (v) पल्लव वसन कहा गया है। — ~~सुखी डाली~~



प्रश्न → 5

उ० →

(i) डॉ. श्याम सुन्दर दुबे ।

(ii) ब्रजभाषा ।

(iii) रेलगाड़ी की सट-पट ।

(iv) महादेवी वर्मा ।

(v) बबले नै ।

प्रश्न → 6

B उ० →

S

E

M

P

विभावरी के बीतने पर कृषा नागरी से हमारा तात्पर्य यह है कि रात के बीतने पर कृषा रुपी स्त्री जाग गयी है वह कहती है अब तू उठ जा क्योंकि सुबह अर्थात् प्रातः काल का समय आ गया है जिसके कारण हे सखी अब तू जाग जा । कृषा रुपी स्त्री पनघट रुपी आकाश से तारों की सटकी भर रही है अब तू देख सभी अपने अपने कर्म को सम्पादित कर रहे हैं प्रातः काल का वर्णन करते हुए वह कहती है कि देख सभी पक्षी आकाश चहचहाते हुए उड़ रहे हैं अपना करलव करते हुए प्रकृति में संगीत बह लय का बहाव कर रहे हैं उसी समय अपनी मनोरम क्य बियेरते हुए सूर्य का भी आगमन हो गया है ।

प्रातः काल प्रकृति द्वारा बहती हुए पवन के झोंकों ने किसलय के पौधों पर अपना आँचल री जाल बियेर रहा है जिस कारण से गेहूँओं की कोमल कोपलें आँचल के समान उड़ रही हैं। इन्ही सभी दृश्यों को देखकर नायिका कहती है कि हे सखि । अब तू जाग जा क्योंकि रातबीत चुकी है।



विभावरी से रात तथा ऊषा नागरी से आश्राय सुबह सपी
नायिका से हैं।

प्रश्न ⇒ 12

उ० ⇒

शान्त रस ⇒ जहाँ पर दुनिया की नवर चीजों से विरक्त
होकर ईश्वर के चरणों में लीन हो जाने
पर जो आत्मा को शान्ति का अनुभव होता
है, उसी को शान्त रस कहा जाता है।

~~अभुभाव, संचारी भाव तथा विभाव मिलकर स्थायी
भाव को परिपक्व करके तभी रस की
निष्पत्ति होती है।~~

इसी रचना के अनुसार ही शान्त रस का श्री
निष्पादन किया गया है।

शान्त रस का उदाहरण ⇒

राम नाम की लूट है,
लूट सकी तो लूट ।
अन्त काल पकतायेगा,
जब प्राण जायेगे लूट ॥



प्रश्न ⇒ 14

उ० ⇒

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(क) दो रचनाएँ ⇒ (i) रस भीमांसा
(ii) चिन्तामणि - 1

(ख) भाषा ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी की भाषा अत्यन्त सहज एवं सरल है आचार्य रामचन्द्र जी की भाषा अत्यन्त प्रवाहमयी तथा जोजस्वी है जिसके कारण भाषा में समरसता आ गयी है। इनकी भाषा खड़ी बोली है तथा मुहावरों, लोकोपमियों के सुदृढ़ प्रयोग के कारण इनकी भाषा में सामान्यता के साथ-साथ विविधता के गुण का भी प्रादुर्भाव होगा है। इनकी भाषा काव्य गुणों का भी समागम है।

शैली ⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने निम्न लिखित शैलियों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है—

(i) वर्णात्मक शैली ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी ने अपने साहित्य में वर्णात्मक शैली का प्रयोग किया है।

आत्म व्यंजक शैली ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी ने आत्म व्यंजक शैली का भी प्रयोग अपने साहित्य में किया है।

आत्म व्यंजक शैली एक विशेष परक शैली है।



(गं) विचारात्मक शैली ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी ने विचारात्मक शैली का भी चित्रण अपने साहित्य में किया है।

इन्होंने भावात्मक, विरलेषणात्मक, विशिष्टतात्मक आदि शैलियों का प्रयोग अपने काव्य साहित्य में किया है।

(घ) साहित्य में स्थान ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी साहित्य के स्तम्भकारक लेखक हैं।

इनमें आलोचना करनेका एक अत्यन्त विशिष्ट गुण है। ये महान साहित्यकारों में से एक हैं। हमारा हिन्दी साहित्य इन्हें कभी भूलेंगा।

B
S
E

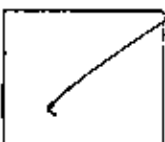
M
P

(का) दो रचनाएँ ⇒ ① ~~सूरदास~~ सूरसागर ।
② साहित्य लहरी ।

(ख) भाव पत्र ⇒ महाकवि सूरदास बहुत महान कवियों में से एक हैं। इन्होंने श्रीकृष्ण का वर्णन इस ढंग से किया है कि इनका तवण कर कानों में नभी उत्तेजना का संचार हो जाता है।

① श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त ⇒ सूरदास भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्तों में

से एक हैं। इन्होंने औंयैत होते हुए भी इनका पवर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त किया है।





② वात्सल्य के चिह्ने ⇒ महाकवि सूरदास जी वात्सल्य रस के चिह्ने कहे जाते हैं क्योंकि इन्होंने इसका वर्णन कुशल दंग से किया है।

③ प्राकृतिक प्रेम भावना ⇒ महाकवि सूरदास प्राकृतिक प्रेम भावों द्वारा भी अपने काव्य का विस्तारण किया है।

④ भक्ति भाव से पूर्ण ⇒ महाकवि सूरदास जी भक्ति भाव से पूर्ण रूपेण परिपूर्ण हैं। भक्ति भाव से ही उन्होंने अपना काव्य रचित किया।

कलापक्ष ⇒ ① शान्त रस का प्रयोग ⇒ सूरदास जी ने शान्त रस का प्रयोग कर काव्य में सरसता ला दी है।

महा कवि सूरदास जी ने मुक्तक गेय काव्य तथा रीला और उल्लास शब्द तथा पुनरुक्त प्रकारा आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। तथा इसमें संगीनात्मकता भी होती है।

② साहित्य में स्थान ⇒ महाकवि सूरदास जी का साहित्य में अत्यन्त महत्व पूर्ण स्थान है। वे कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वोच्च कवि माने जाते हैं। सूरदास जी अपने काव्य के द्वारा ही इतने प्रसिद्ध हुए हैं।



संकेत ⇒ 16

उ० ⇒

संकेत ⇒ दुख या _____ तक रहता है।

सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के भ्रम नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी हैं।

प्रसंग ⇒ यहाँ पर ~~कई~~ लेखक ने आशांका का वर्णन किया है।

व्याख्या ⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते हैं कि दुख या आपत्ति का पूर्ण निश्चय न रहने पर पर उसके आने की सम्भावना मात्र से जो आवेश रहित मनोविकार की उत्पत्ति होती है उसे आशांका द्वारा व्यक्त किया है। वे कहते हैं इस स्थिति में व्यक्ति को व्याकुलता की भावना ग्रसित नहीं करती है। इस आशांका की संचार गति अपेक्षाकृत धीमी होती है। परन्तु इसका प्रभाव अधिक समय तक प्रभावित करता है। आशांका तथा भ्रम में यही तो अन्तर होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने यहाँ पर आशांका का वर्णन किया है।

B
S
E
M
P



प्रश्न → 17

उ० → संकेत → भाई एक लहर ————— श्रुतारा हैं।

संदर्भ → प्रस्तुत प्रकाश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के भाई बहन नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता गोपाल सिंह नेपाली हैं।

प्रसंग → यहाँ पर कवि भाई के सम्बन्ध को व्यक्त किया है।

B
S
E
M
P

भाष्या → गोपाल सिंह नेपाली जी कहते हैं एक भाई राष्ट्र हित के लिए अपनी बहन से कहता है कि मैं लहर के रूप में बन जाऊँ और तुम नदी की धारा के समान तीव्र बन जाओ और जब हम हम ठ दोनों मिल कर देश की रक्षा करेंगे तब यह संगम गंगा के समान हो जाएगा तथा अपने देश के दुश्मनों को किनारे के समान डुबो देंगे। इसी उत्तेजना में भाई कहता है कि विपत्ति के समय में भाई ही केवल अपनी बहन का सहारा हैं। तथा उसी प्रकार एक बहन भाई श्रुतारा हैं। अर्थात् अत्यन्त प्रिय हैं।

- शेष →
- ① राष्ट्रीयता के भाव ।
 - ② देश की रक्षा के प्रति समर्पण ।
 - ③ पुनरुक्त प्रकाश अलंकार ।
 - ④ ओज गुण का वर्णन ।



प्रश्न → 18

उ० →

(i) उपयुक्त शीर्षक — "धर्म पालन"।

(ii) धर्म पालन करने में सबसे बड़ी बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की प्राप्ति की अस्थिरता और मन की दुर्बलता की हैं। मनुष्य को अपने कर्तव्य मार्ग पर अज्ञान तथा आलस्य को छोड़ देना चाहिए। यदि उसका मन अज्ञान में पक्का हुआ तो आत्मा का शक्ति मानकर अपने धर्म का पालन करता है। और यदि नहीं तो वह अपना चरित्र खराब कर लेता है।

(iii) धर्म पालन में बड़ी बाधा मन की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की दुर्बलता हैं।

P
L
M
P

प्रश्न → 13

उ० →

(a) आँखों का तारा — मोहन अपने पिता का आँखों का तारा हैं।

अंधों की लाठी — मोहन अपनी बूढ़ी माँ के लिए अंधों के लाठी के समान हैं।

(b) बुन्देली एवं मालवी मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड, मधुआ, मालदीव, बघेल खण्ड आदि में बोली जाती है।

अथवा



- (अ) (i) सूर्योदय के साथ पक्षी चहचहाने लगते हैं।
- (ii) गरीब होते हुए भी वह ईमानदार हैं।

~~भय~~

प्रश्न → 10
 उ० →

भय और आशंका में अन्तर—

B
S
E
M
P

भय	आशंका
① दुख या आपत्ति की सम्भावना से जो आवेग पूर्ण स्थायी मनोविकार पैदा होता है उसे भय कहते हैं।	① आशंका तो आवेग शून्य भाव को कहते हैं।
② इसमें व्याकुलता पायी जाती है।	② इसमें व्याकुलता नहीं पायी जाती है।
③ इसमें संचार की गति तेज होती है।	③ इसमें संचार की गति अपेक्षाकृत धीमी होती है।
④ इसका प्रभाव कम समय तक रहता है।	④ इसमें प्रभाव अधिक समय तक रहता है।



प्रश्न → 19

उ० →

सेवा में,

श्रीमान जिलाध्यक्ष महोदय
जिला - रीवा (मध्यप्र.)

विषय → ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबन्ध लगाने
हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर, विनम्र निवेदन है कि मैं जिला: रीवा की
निवासी हूँ। जैसे की आप को ज्ञात होगा
की बोर्ड की परीक्षाएँ नजदीक हैं। अतः
बच्चों को ज्ञात वातावरण चाहिए परन्तु स्कूल
के आस पास आजकल अत्यन्त तेज ध्वनि
में टेप रिकार्डों को बजाया जा रहा है
जिसके कारण बच्चों का अध्ययन प्रभावित
हो रहा है।

अतः, श्रीमान जी से विनम्र निवेदन
है की इन ध्वनि विस्तारक यंत्रों
पर प्रतिबन्ध लगाने का आदेश
जाशी कौं आपकी बड़ी कृपा होगी।

बान्यबाद

आपका निवासी (आज्ञाकारी)

दिनांक - 6-03-2009

ABC



प्रश्न ⇒ 8

उ० ⇒

रहस्यवादी कविता की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

① आलौकिक सत्ता के प्रति प्रेम ⇒ रहस्यवादी कविता में आलौकिक सत्ता के प्रति प्रेम का विस्तार पाया जाता है। रहस्यवादी कविता में इन पर विश्वास किया जाता है।

② प्रकृति के प्रति प्रेम ⇒ रहस्यवादी कविता में प्रकृति के प्रति मानवीकरण की प्रकृति धार्य जाती है। रहस्यवादी काव्य द्वारा में ही प्रकृति प्रेम का रस उमड़ता है।

③ रूढ़िवादियों के प्रति विद्रोह — रहस्यवादी कविताओं में रूढ़िवादी परम्परा का विद्रोह किया गया है।

सामाजिक सन्धार्य का चित्रण ⇒ रहस्यवादी कविताओं में सामाजिक सन्धार्य का चित्रण किया गया है। कल्पना का इसमें कोई महत्व नहीं होता है।



प्रश्न → 9
उ. →

हिन्दी में उपन्यास सम्राट जयशंकर प्रसाद को कहा गया है क्योंकि इन्होंने सबसे ज्यादा उपन्यासों का प्रतिपादन किया गया है। जयशंकर प्रसाद उपन्यास कारकों में से एक हैं।

- जयशंकर प्रसाद के दो उपन्यास — ① कामायनी ।
② लहर ।

B
S
E
M
P

प्रश्न → 10
उ. →

बाँसुरी की मीठी टेर सुनकर देवकी ने अत्यन्त आनन्द का अभुभव किया। जब स कंस द्वारा वह कारागार में बंदी बनी थी तब वह निराशा आदि दुखों से घिरी हुई थी।

परन्तु अब वह उस बाँसुरी की टेर को सुनकर वह आनन्दित हो उठी थी। उसे ऐसा लगा रहा था मानों समस्त संसार में कुछ भी सत्य नहीं है। सब कुछ नरवर है असली सुख तो इन सब के त्याग में ही निहित है। उसे लग रहा था मानों उसके हृदय का बागीचा अत्यन्त सुगन्ध से भर गया है। उसे अब जन्म मरण का कोई दुख नहीं था वह पूर्ण सपेण निश्चिन्त हो गयी थी। वह सभी

1 का कोश



को यही शिक्षा दे रही थी की जन्म-मरण ये दोनों ही सत्य जा प्रति बिम्ब हैं इसके असा-अलावा समस्त संसार में कुछ भी सत्य नहीं है अतः हम सबको यह याद रखते हुए परमात्मा के ध्यान लगे रहते हुए मोक्ष के मार्ग पर सफलता पूर्वक जाने की तैयार करना चाहिए। कंस उसके इस रूप देखकर भयभीत हो गया और वरुदेव के आरच्य की तो मीमा ही नहीं रही।

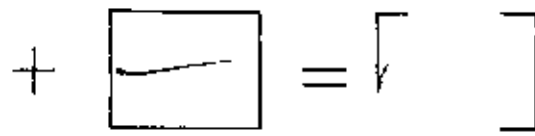
B
S
E
M
P

प्रश्न →

उत्तर →

“फल और मालिन” दोनों ही तथ्य एक दूसरे के पूरक हैं। क्योंकि फल ^{मालिन} के पास ही तैयार किया जाता है तथा मालिन ही फल को तोड़ता है। अतः ये दोनों एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। क्योंकि ये दोनों एक दूसरे से सम्बन्धित है इसलिए ये दोनों अव्ययमप्रकार प्रक्रिया है। फल और मालिन दोनों अपने अन्त के क्षमप में मुरझा जाते हैं। अनेक असमानता होते हुए भी ये एक साथ ही मुरझा जाता है। फल और मालिन दोनों ही अपने गुणों की वजह से ही एक दूसरे को प्रभावित करने में सक्षम सक्षम हैं। तभी तो ये दोनों एक ही स्थिति में जा कर मुरझा जाते हैं। फल और मालिन एक तुलनात्मक पक्षों की तरह हैं। फल और मालिन दोनों ही अपनी राष्द्र रक्षा के प्रति सजग रहने को तैयार

श्री।

प्रश्न \Rightarrow 20उ० \Rightarrow

प्रदूषण : कारण और निदान

सूचिका \Rightarrow ① प्रस्तावना ② प्रदूषण के कारण ③ प्रदूषण के प्रकार ④ प्रदूषण का निदान ⑤ उपसंहार।

① प्रस्तावना \Rightarrow आज हमारा देश अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। उन समस्याओं में से एक समस्या प्रदूषण की समस्या है। प्रदूषण की समस्या हमारी मानव जाति की ही हुई है। प्रदूषण की समस्या से हमारा परिचय हमारे द्वारा की गयी गलतियों से हुआ है क्योंकि पर्यावरण का प्रदूषण होता है। हमारे मानव जाति के समक्ष एक अत्यन्त सख्त चुनौती है। प्रदूषण की समस्या हमारे देश के लोग अपनी दैनिक क्रियाओं को सम्पादित करने के लिए हमारे द्वारा जिन यंत्रों का प्रयोग किया जाता है उनके द्वारा हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता है। पर्यावरण समस्या हमारे सम्पूर्ण अर्थशास्त्र में व्याप्त हो चुकी है। अतः हमें कुछ उपाय कर इन समस्याओं से छुटकारा पाना चाहिए नहीं तो हमारा सम्पूर्ण समाज बाधित हो जाएगा। आज हमारा पर्यावरण पूर्ण रूप से विषुय हो गया है।

B
S
E
M
P

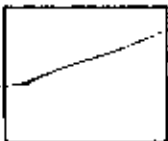


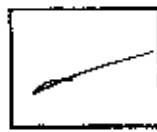
② प्रदूषण के कारण \Rightarrow प्रदूषण के कारण अनेक हैं। क्योंकि आज हमारा पर्यावरण अनेक प्रकार की विषम परिस्थितियों का सामना कर रहा है। आज हमें विकास की दौड़ में दौड़ते चले जा रहे हैं परन्तु यह नहीं देख रहे हैं कि इस प्रगति से हमारे देश को कितनी हानि उठानी पड़ रही है।

पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण—

- (i) औद्योगिकीकरण का विकास।
- (ii) वाहनों में सतीशत बढ़ती हुई वृद्धि।
- (iii) रासायनों का अवाधुन्य प्रयोग।
- (iv) वनों का विनाश।
- (v) वनाग्नि।
- (vi) वृक्षारोपण की गति अत्यन्त धीमी।

उपरोक्त दिये गये कारणों में से ही हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। अतः हमें चाहिए कि इन सभी के ऊपर नियंत्रण छाँ सके ताकि भारत में पर्यावरण प्रदूषण की दर कम हो सके। और हमारा पर्यावरण स्वच्छ और निर्मल बना रहे।





(13) प्रदूषण के प्रकार \Rightarrow भारत में पर्यावरण प्रदूषण अनेक प्रकार का होता है—

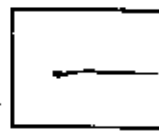
- ① वायु प्रदूषण ।
- ② जल प्रदूषण ।
- ③ मृदा प्रदूषण ।
- ④ रेडियोधर्मी प्रदूषण ।
- ⑤ उर्वरक प्रदूषण ।

① वायु प्रदूषण \Rightarrow प्रदूषण के अनेक प्रकारों में से वायु प्रदूषण का महत्व पूर्ण स्थान है

क्योंकि वायु प्रदूषण सबसे ज्यादा होता है। जिसके लिए हमें एक ही मनुष्य ही तो है।

② जल प्रदूषण \Rightarrow जल प्रदूषण से हमारा आश्रय स्वच्छ जल (H_2O) में अनेक अवांछनीय पदार्थों का मिल जाता है। जल प्रदूषण कहलाता है। जल प्रदूषक तत्व जैसे— पशुओं का अपशिष्ट पदार्थ + कारखानों से निकला अपशिष्ट पदार्थ + पशुओं का जलाशयों में स्नान आदि।

③ मृदा प्रदूषण \Rightarrow जल प्रदूषण के समान ही मृदा प्रदूषण भी होता है क्योंकि मृदा में अवांछनीय पदार्थों का मिलना ही मृदा प्रदूषण कहलाता है।



5) रेडियोधर्मी प्रदूषण \Rightarrow जिन पदार्थों से रेडियोधर्मी तरंगें उत्पन्न होती हैं वह पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती हैं।

प्रदूषण के निदान \Rightarrow पर्यावरण प्रदूषण हमारे देश के समस्त एक अत्यन्त गम्भीर समस्या है। अतः इसके निदान हेतु हमें अनेक उपाय करने चाहिए—

- 1) वृक्षारोपण की गति तेज।
- 2) जनसंख्या वृद्धि दर घीमी।
- 3) औद्योगीकरण की सीमा का निर्धारण।
- 4) वाहनों का दूसरा विकल्प योजना।
- 5) उर्वरकों का समुचित प्रयोग।

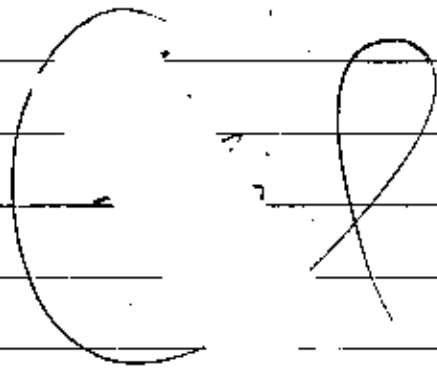
उपरोक्त उपायों को कर हम सब पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को कम कर सकते हैं। पर्यावरण प्रदूषण हमारे देश के समस्त एक अति खोचनीय समस्या है। अतः हमें इन उपायों को कर के पर्यावरण की समस्या का निदान करना चाहिए।

“अंधकार है वहाँ जहाँ अराधित नहीं,
सुवि है वह देश जहाँ जायति नहीं”



उपसंहार ⇒ उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि पर्यावरण का बचाव करना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है। और हम यह कर भी सकते हैं। और कहा भी गया है—

“जिन मुश्किलों में मुस्कराना होना
उन मुश्किलों में मुस्कराना हमारा धर्म है।”



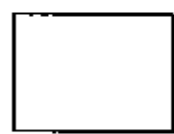
23



+



=

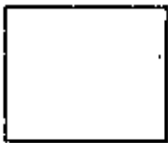
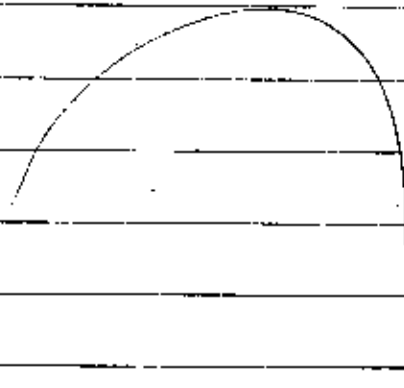


योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

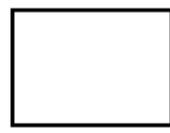
24



+



=



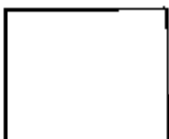
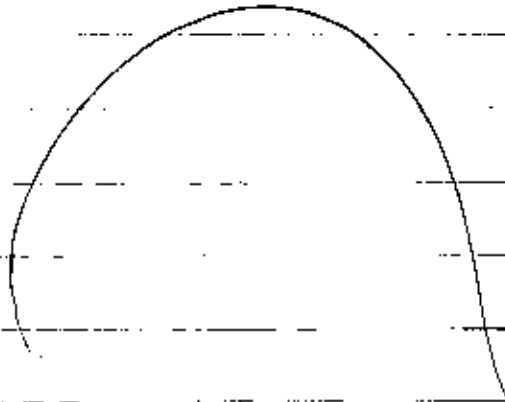
योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग